Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ विनायक चतुर्थी व्रत का महत्व ॥

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ शुक्ल पक्ष की गणेश आराधना ॥

हर चंद्र मास में अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायक चतुर्थी कहा जाता है। यह दिन श्रीगणेश की पूजा, प्रार्थना और आत्मसंयम से जुड़ा है। भक्त बुद्धि, धैर्य और अपने कामों में विवेक की कामना से पूजा करते हैं।

मध्याह्न पूजन का महत्व

विनायक चतुर्थी की मुख्य पूजा दिन के मध्याह्न काल में की जाती है। व्रत का दिन स्थानीय मध्याह्न में चतुर्थी तिथि के रहने के आधार पर तय होता है। इसलिए अलग शहरों में तारीख या पूजा मुहूर्त अलग हो सकता है।

हर महीने की चतुर्थी

शुक्ल चतुर्थी प्रत्येक महीने आती है। भाद्रपद की शुक्ल चतुर्थी विशेष रूप से गणेश चतुर्थी के नाम से प्रसिद्ध है। मासिक विनायक चतुर्थी में घर पर सरल गणेश पूजा की जा सकती है।

संकष्टी से समय का अंतर

पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी संकष्टी कहलाती है और उसमें चंद्रोदय का विशेष स्थान है। विनायक चतुर्थी की पूजा मध्याह्न पर केंद्रित रहती है। दोनों की तिथि चुनने का आधार अलग है।

॥ श्रद्धा, विवेक और दिनचर्या ॥

गणेशजी का स्मरण

गणेशजी को विघ्नहर्ता और बुद्धि के देवता के रूप में पूजा जाता है। भक्त दूर्वा, फूल और मोदक अर्पित करके “ॐ गं गणपतये नमः” का जप करते हैं। अपनी भाषा में प्रार्थना करना भी उतना ही सहज है।

व्रत का भाव

दिन में संयमित भोजन, स्वच्छता, सौम्य व्यवहार और परिवार के साथ प्रसाद बाँटना व्रत को सार्थक बनाता है। किसी काम की सफलता की निश्चित गारंटी के रूप में धार्मिक फल को न देखें।

व्यावहारिक तैयारी

मध्याह्न पूजा से पहले सामग्री एकत्र करें और अपना समय स्थानीय पंचांग से देखें। उस दिन काम के बीच लंबा अनुष्ठान संभव न हो तो छोटी पूजा, नाम-जप और प्रार्थना कर सकते हैं।

उपवास का प्रकार स्वास्थ्य के अनुसार चुनें। गर्भावस्था, मधुमेह, बीमारी या नियमित दवाओं में भोजन-पानी रोकना हानिकारक हो सकता है; आवश्यक चिकित्सा और आहार जारी रखें।

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥